अध्याय–7

पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में समस्याएं

मानव जीवन; आयु–चक्र के विभिन्न स्तरों से गुजरता हुआ सेवानिवृत्ति तक पहुॅचता है। यही सेवानिवृत्ति (वृद्धावस्था) आयु–चक्र की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति को अनेकों व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं तथा परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। **कूटनर बर्नार्ड[1] (2006)** ने अपने आनुभविक अध्ययन 'ऐम्प्लॉइड्स एण्ड रिटायरमेन्ट्स' के आधार पर लिखा है कि 'कुछ व्यक्ति तो सेवानिवृत्ति पर आने वाली समस्याओं का सामना करने के लिए स्वयं को पहले से ही तैयार कर लेते हैं; लेकिन जो व्यक्ति स्वयं को इसके लिए पहले से तैयार नहीं करते हैं; तो उन्हें सेवानिवृत्ति के पष्चात् विभिन्न परिवर्तनों व परिवर्ती समस्याओं का अनायास सामना करना पड़ता है। व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक परिवर्तनषील परिस्थिति तब आती है जब उसे सेवानिवृत्ति या उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य को; जिससे उसे (सेवानिवृत्त को) एक निष्चित आय भी प्राप्त होती है; अनिवार्यतः समाप्त करने का आदेष दिया जाता है।' वर्तमान परिवर्ती परिवेष में सेवानिवृत्तों के समक्ष वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्यों में विभिन्न प्रकार की समस्याएं देखी जा सकती हैं जो पारिवारिक–सामाजिक तथा आर्थिक समायोजन के सम्बन्ध में उन्हें होती हैं। इनमें से कुछ समस्याएं 'सामान्य' तथा कुछ 'जटिल' प्रकृति की होती हैं; और कुछ तो इतनी जटिल प्रकृति की होती हैं कि उनका समाधान करना सम्भव नहीं हो पाता; इसलिए यह कल्पना से परे है कि जीवन 'समस्या रहित' भी हो सकता है। अमेरिकन विद्वान **क्रोटेड फ्रेड एण्ड रॉबर्ट सी.एच.[2] (1969)** ने अपने आनुभविक अध्ययन 'वूमेन इन रिटायरमेन्ट'; के आधार पर लिखा है कि (1) पुरूशों की तुलना में महिलाओं को सेवानिवृत्त होने पर कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि परिवार में कमाऊ की भूमिका आज भी पुरूशों के जिम्मे है (2) सेवानिवृत्त होने पर अपने परिवारों में पुरूशों की अपेक्षा महिलाएं षीघ्र समायोजित कर लेती हैं (3) महिलाएं; पुरूशों की अपेक्षा अपनी कार्य–भूमिकाएं सेवानिवृत्ति के पष्चात् भी भली भॉति निर्वाह कर लेती हैं; या फिर भूमिकाएं निर्वाह करने का अधिक प्रयास करती हैं, (4) महिलाएं; अपने परिवार के प्रति तुलनात्मक अधिक समर्पित, निश्ठावान तथा भावनात्मक लगाव रखती हैं अतः समायोजित होकर षान्ति एवं सन्तोश की अनुभूति अधिक करती हैं, (5) अध्ययन में पाया गया कि बहुत कम ही सेवानिवृत्त पुरूश अपने जीवन के

मुकाम में सुख तथा सन्तोश का अनुभव करते हैं क्योंकि परिवार निर्वहन का उत्तरदायित्व महिलाओं पर नहीं; अपितु पुरूशों पर ही होता है; (6) महिलाएं जीवनपर्यन्त, अपनी अभिरूचियों, हितों और लक्ष्यों के मार्ग में आने वाली बाधाओं को सहन करने में अधिक परिपक्व तथा अभ्यस्थ हो जाती हैं; और वातावरण के अनुरूप अपने व्यवहारों में परिवर्तन करते हुए सन्तुलित सम्बन्ध कायम कर लेती हैं; जबकि **प्रो. विलियम गेट्स[3] (1998)** ने लिखा है कि 'भूमिका–समायोजन जीवनभर निरन्तर चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने तथा पर्यावरण के मध्य अपनी आवष्यकताओं व परिस्थितियों के साथ सन्तुलित सम्बन्ध कायम रखने के लिए अपने व्यवहारों में परिवर्तन करता है।' आपने निश्कर्शतः लिखा है कि परिपक्व व्यक्ति के लोग; अपरिपक्व, धैर्यहीन, आक्रामक, क्रोधी, कुण्ठित तथा घृणित व्यक्तित्व के लोगों की तुलना में षीघ्र समायोजित हो जाते हैं क्योंकि ये सभी व्यक्तित्व मानसिकता के आधार पर स्वयं को ही दोशी मानते हैं। जबकि परिपक्व व्यक्तित्व के लोग नई परिस्थितियों का आनन्द उठाते हैं; और इसी बजह से नयी परिस्थितियों में सरलता/सुगमता से ढल जाते हैं; एवं व्यक्तिगत सम्बन्धों में आनन्द की अनुभूति अधिक करते हैं। **पीटरसन[4] (2006) ने लिखा है कि** सेवानिवृत्ति के पष्चात् सेवानिवृत्त व्यक्ति की मनोदषा इस बात पर निर्भर करती है कि उसे उसके परिवार, पड़ौस, मित्र दोस्तों तथा समुदाय के लोगों से कितना सहयोग तथा सम्मान मिलता है। इन बदली हुई परिस्थितियों में व्यक्ति स्वयं को कितना समायोजित कर पाता है; यह उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। सेवानिवृत्ति के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया व अनुभूति इस बात पर निर्भर करती है कि सेवानिवृत्ति को लेकर व्यक्ति कितने दबाव में है तथा परिवर्ती परिस्थिति को समझने व सामना करने की उसमें कितनी क्षमता है? आनुभविक अध्ययन से स्पश्ट हुआ है कि सेवानिवृत्ति को लेकर वे व्यक्ति बहुत अधिक दबाव व तनावग्रस्त रहते हैं; जो उच्च पद पर आसीन रहे होते हैं; और व्यस्तता में आनन्द अनुभव करते हैं क्योंकि उनका पद ही उनके व्यक्तित्व की पहचान बन चुका होता है। लेकिन जो व्यक्ति निम्न पद पर से सेवानिवृत्त होते हैं; उनके लिए नियमित आय का कम होना, या समाप्त होना विभिन्न समस्याओं को जन्म देता है। 'सन्तुश्ट सेवानिवृत्त' का सम्बन्ध इस बात से है कि सेवानिवृत्ति व्यक्ति सेवाकाल के मध्य खाली समय तथा अवकाष क्षण का समय किस प्रकार व्यतीत करता है? अधिकांषतः व्यक्तियों (89.3ः प्रकरणों में) को सेवानिवृत्ति से समायोजन करने में समय अधिक लगा है जबकि मात्र 10.7 प्रतिषत प्रकरणों में सेवानिवृत्ति से समायोजन षीघ्र होना पाया गया है। ये

वे सेवानिवृत्त हैं जिनके व्यक्तित्व परिपक्व तथा धैर्यवान हैं। इससे स्पश्ट है कि धैर्यवान तथा परिपक्व व्यक्तित्व के लोगों में समायोजन क्षमता तुलनात्मक अधिक होती है।

सिंह सीमा[5] (2002) ने अपने अनुभवजन्य अध्ययन 'सेवानिवृत्त व्यक्तियों का भूमिका समायोजनः थल सेना के सेवानिवृत्त सैनिकों का एक समाजषास्त्रीय अध्ययन (षोध प्रबन्धः बनस्थली विद्यापीठ डीम्ड विष्वविद्यालय राजस्थान) के अनुसार थल सेना के सेवानिवृत्ति में विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करने की क्षमता 82 प्रतिषत में पायी गयी; 18 प्रतिषत वे सूचनादाता हैं जो अभी तक (सेवानिवृत्त होने तक) अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हो पाए हैं; तथा जो अपनी आर्थिक स्थिति से सन्तुश्ट नहीं हैं। निश्कर्शतः सेवानिवृत्ति के पष्चात् समायोजन की दषाएं; व्यक्ति की उस समय की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती हैं, अर्थात् 'व्यक्ति की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति का, उसके समायोजन की दषाओं से प्रत्यक्ष तथा घनिश्ठ सम्बन्ध होता है।' 65 प्रतिषत प्रकरणों में बच्चों का सैटिलमेन्ट तथा विवाह की जिम्मेदारी पूर्ण हो जाना; सेवानिवृत्त के सुसमायोजन में महत्वपूर्ण कारक पाये गये हैं। अनुसंधित्सु ने लिखा है कि सेवानिवृत्ति के पष्चात् केवल वे व्यक्ति ही सुसमायोजित होते पाए गए जो (1) परिपक्व व्यक्तित्व के हैं (2) आर्थिक रूप से सन्तुश्ट हैं तथा (3) जो अपने उत्तरदायित्वों/ जिम्मेदारियों से निजात पा चुके हैं; यथा– बच्चों की षिक्षा पूर्ण होना तथा सैटिलमेन्ट (नौकरी लगना), विवाह हो जाना, मकान निर्माण आदि। **षेफर तथा षोबेब[6] (2007) के अध्ययन के अनुसार** 'सेवानिवृत्ति के समय सुदृढ़ आर्थिक स्थिति का; सेवानिवृत्त व्यक्ति की समायोजन प्रक्रिया से प्रत्यक्ष तथा घनिश्ठ सम्बन्ध होता है।' क्योंकि मानव जीवन उन परिस्थितियों का एक ऐसा क्रम तथा पुंज है जिसमें कि विभिन्न परिस्थितियॉ तथा आवष्यकताएं उत्पन्न होती हैं; और फिर उन्हें; उन्हीं को पूरा करना पड़ता है। जिसके लिए 'सुदृढ़ आर्थिक स्थिति' तथा सेवानिवृत्त व्यक्ति का 'धैर्यवान व्यक्तित्व' दो कारक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा आवष्यक हैं।

उपर्युक्त साहित्य समीक्षाओं के विष्लेशण के प्रकाष में षोधार्थिनी को अपने अध्याय के प्रसंग में यह ज्ञान बोध विकसित हुआ है कि सेवानिवृत्त व्यक्तियों के पारिवारिक–सामाजिक समायोजन के मार्ग में (1) सामान्य तथा (2) विषिश्ट; कारक उत्तरदायी होते हैं जो भॉति–भॉति की विभिन्न समस्याएं जनित करते हैं। **सामान्य उत्तरदायी कारकों के अन्तर्गतः** प्राचीन तथा नवीन विचारधाराओं में सामंजस्य की समस्याएं, उपेक्षित अनुभव करना, नव युवक युवतियों के व्यवहारों से नैराष्य की समस्याएं, कर्ता की षक्ति में कमी की अनुभूति, पारिवारिक सामाजिक सम्बन्धों में कमी (ह्रास), मान सम्मान में कमी की अनुभूति करना इत्यादि; तथा **विषिश्ट उत्तरदायी कारकों के अन्तर्गतः** जिम्मेदारियों/उत्तरदायित्वों (बच्चों की षिक्षा,

निबटारा/बन्दोबस्त (सैटिलमेन्ट), विवाह तथा भवन निर्माण) का पूर्ण न हो पाना, व्यक्तित्व का परिपक्व न होना, धैर्यवान व्यक्तित्व न होना, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होना, परिवार के सदस्यों की अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति का साधन न होना, परिवार में कर्ता/मुखिया की भूमिका समुचित रूप में निर्वाह में समर्थ न होना, अपनी कार्य भूमिकाएं भलीभॉति निर्वाह न कर पाना, परिवर्तनषील विशम परिस्थितियों में मुकाबला करने में अक्षमता, परिवार के प्रति समर्पित, निश्ठावान, भावनात्मक लगाव न होना, जीवन के इस मुकाम (मोड़) पर सुख षान्ति की अनुभूति न कर पाना, थोड़े में निर्वाह करने में असफल व्यक्तित्व इत्यादि प्रमुख हैं।

षोधार्थिनी ने पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक सामान्य तथा विषिश्ट उत्तरदायी कारकों के बारे में अध्ययनार्थ चयनित कुल 400 सूचनादात्रीओं के अभिमत; उनसे व्यक्तिगत साक्षात्कार सम्पन्न करते हुए प्राप्त किए हैं; जिस पर अग्रॉकित तालिकाएं नं. 7(1) तथा नं. 7(2) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 7(1): पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक सामान्य उत्तरदायी कारक : सूचनादात्रीओं के अभिमत

क्रम	पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक सामान्य उत्तरदायी कारक	सूचनादात्रीओं के अभिमत/प्रत्युत्तर (आवृत्तियॉं/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हॉं	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	प्राचीन तथा नवीन विचारधाराओं में परस्पर तालमेल न होना	320 ;80%00द्ध	32 ;08%00द्ध	48 ;12%00द्ध	.. ;00%00द्ध	400 ;100%00द्ध
2	स्वयं को उपेक्षित अनुभव करना	369 ;92%25द्ध	06 ;01%50द्ध	20 ;05%00द्ध	05 ;01%25द्ध	400 ;100%00द्ध
3	नई पीढ़ी के व्यक्तियों के आचरण व व्यवहारों से नैराष्य की समस्याएं	282 ;70%50द्ध	17 ;04%25द्ध	101 ;25%25द्ध	.. ;00%00द्ध	400 ;100%00द्ध
4	सेवानिवृत्त द्वारा (स्वयं की) षक्ति में कमी की अनुभूति करना	298 ;74%50द्ध	20 ;05%00द्ध	74 ;18%50द्ध	08 ;02%00द्ध	400 ;100%00द्ध
5	पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्धों तथा अन्तःक्रियाओं में कमी की अनुभूति करना	328 ;82%00द्ध	.. ;00%00द्ध	68 ;17%00द्ध	04 ;01%00द्ध	400 ;100%00द्ध
6	उचित मान सम्मान मिलने में कमी की अनुभूति करना	360 ;90%00द्ध	.. ;00%00द्ध	40 ;10%00द्ध	.. ;00%00द्ध	400 ;100%00द्ध
7	षारीरिक–मानसिक असमर्थता की दषाएं, आदि	272 ;68%00द्ध	29 ;07%25द्ध	92 ;23%00द्ध	07 ;01%75द्ध	400 ;100%00द्ध

(नोटः कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषतता प्रदर्षित करते हैं)

प्रस्तुत प्रसंगाधीन तालिका 7(1) के अन्तर्गत पारिवारिक– सामाजिक समायोजन में बाधक सामान्य उत्तरदायी कारकों के प्रति अध्ययन की गयी सभी 400 सूचनादात्रीओं के अभिमतों का विष्लेशण किया गया है–

(1) 320(80:) सूचनादात्रीओं ने स्वीकार किया है कि नई तथा पुरानी पीढ़ी के विचारों में तालमेल न होना पारिवारिक– सामाजिक समायोजन में सामान्य बाधक कारक है।

(2) 369(92.25:) सूचनादात्रीओं के अनुसार स्वयं द्वारा उपेक्षित अनुभव करना पारिवारिक–सामाजिक सामंजस्य में बाधक कारक है।

(3) 282(70.50:) सूचनादात्रीओं के अभिमतों के अनुसार नई पीढ़ी के व्यक्तियों के आचरणों व व्यवहारों से निराषा की भावनाएं आ जाना पारिवारिक–साामजिक सामंजस्य में बाधक कारक है।

(4) 298(74.50:) सूचनादात्रीओं ने यह स्वीकार किया है कि स्वयं द्वारा कर्ता की षक्ति में कमी की अनुभूति करना भी पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक है।

(5) 328(82:) सूचनादात्रीओं के अभिमतों के अनुसार पारिवारिक– सामाजिक सम्बन्धों तथा अन्तःक्रियाओं में कमी की अनुभूति करना भी पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक कारक है।

(6) 360(90:) सूचनादात्रीओं ने स्वीकार किया है परिवार तथा समाज द्वारा उचित मान सम्मान मिलने में कमी की अनुभूति करना भी पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक है।

(7) 272(68:) सूचनादात्रीओं के अनुसार षारीरिक–मानसिक असमर्थता (अक्षमता) की दषाएं भी पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक कारक हैं जिनमें खराब स्वास्थ्य व बीमारियॉ मुख्य हैं।

उक्त आनुभविक तथ्यों के विष्लेशण के प्रकाष में स्पश्ट है कि सेवानिवृत्त व्यक्तियों के अनुसार पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में नई तथा पुरानी पीढ़ी के लोगों की विचारधाराओं में तालमेल न होना, स्वयं को उपेक्षित अनुभव करना, नई पीढ़ी के व्यक्तियों के आचरणों व व्यवहारों से नैराष्य की दषाएं, कर्ता द्वारा स्वयं की षक्ति में कमी की अनुभूति करना, पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्धों तथा अन्तःक्रियाओं में कमी की कमी अनुभव करना, परिवार व समाज द्वारा उचित मान सम्मान मिलने में कमी की अनुभूति करना तथा षारीरिक मानसिक असमर्थता/अक्षमता की दषाएं आदि कारक पारिवारिक–सामाजिक सामंजस्य में सामान्यतः बाधक हैं।

अग्रॉकित तालिका नं. 7(2) पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक विषिश्ट उत्तरदायी कारकों के प्रसंग में अध्ययन की गई कुल 400 सूचनादात्रीओं के अभिमतों पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं0 7(2): पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक विषिश्ट उत्तरदायी कारक : सूचनादात्रीओं के अभिमत

क्रम	पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक विषिश्ट उत्तरदायी कारक	सूचनादात्रीओं के अभिमत/प्रत्युत्तर (आवृत्तियाँ/प्रतिषत)				योग (प्रतिषत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	जिम्मेदारियों/उत्तरदायित्वों का पूर्ण न हो पाना	366 ;91प्र50द्ध	.. ;00प्र00द्ध	34 ;08प्र50द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
2	अपरिपक्व व्यक्तित्व	400 ;100प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
3	धैर्यवान व्यक्तित्व न होना	322 ;80प्र50द्ध	20 ;05प्र00द्ध	50 ;12प्र50द्ध	08 ;02प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
4	परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होना	360 ;90प्र00द्ध	12 ;03प्र00द्ध	28 ;07प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
5	परिवार के सदस्यों की अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति का साधन न होना	340 ;85प्र00द्ध	04 ;01प्र00द्ध	50 ;12प्र50द्ध	06 ;01प्र50द्ध	400 ;100प्र00द्ध
6	परिवार में कर्ता/मुखिया की भूमिका समुचित रूप में निर्वाह में समर्थ न होना	288 ;72प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	98 ;24प्र50द्ध	14 ;03प्र50द्ध	400 ;100प्र00द्ध
7	अपनी कार्य भूमिकाएं भलीभांति निर्वाह न कर पाना	280 ;70प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	100 ;25प्र00द्ध	20 ;05प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
8	परिवर्तनषील व विशम परिस्थितियों में मुकाबला करने में अक्षमता	300 ;75प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	100 ;25प्र00द्ध	20 ;05प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
9	परिवार के प्रति समर्पण, निश्ठा व भावनात्मक लगाव; न होना	322 ;80प्र50द्ध	16 ;04प्र00द्ध	62 ;15प्र50द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध
10	जीवन के इस मुकाम/मोड़ पर भी सुखषान्ति की अनुभूति न कर पाना	308 ;77प्र00द्ध	42 ;10प्र50द्ध	40 ;10प्र00द्ध	10 ;02प्र50द्ध	400 ;100प्र00द्ध
11	थोड़े में निर्वाह करने में असफल व्यक्तित्व व असीमित आकांक्षाएं	264 ;66प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	136 ;34प्र00द्ध	.. ;00प्र00द्ध	400 ;100प्र00द्ध

(नोटः कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित ऑकड़े प्रतिषतता प्रदर्षित करते हैं)

प्रस्तुत तालिका नं. 7(2) के अन्तर्गत पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक विषिश्ट उत्तरदायी कारकों के प्रति अध्ययन की गयी सभी 400 सूचनादात्रीओं के अभिमतों का विष्लेशण किया गया है; अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक तथ्य इस प्रकार हैं–

(1) 366(91.50:) सूचनादात्रीओं के अनुसार परिवार की जिम्मेदारियों/उत्तरदायित्वों (यथाः बालकों की षिक्षा, जॉब सैटिलमेन्ट, विवाह अपना निजी आवास न बना पाना, ऋणी परिवार आदि) का पूर्ण न हो पाना, पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक है।

(2) षत प्रतिषत सूचनादात्रीओं ने सेवानिवृत्त होते हुए भी अपरिपक्व व्यक्तित्व को पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में विषिश्ट उत्तरदायी बाधक कारक बताया है।

(3) 322(80.50:) सूचनादात्रीओं ने संयमी व धैर्यवान व्यक्तित्व न होना (उत्तर के प्रति प्रत्युत्तर देना) कारक को भी पारिवारिक– सामाजिक समायोजन के मार्ग में बाधक कारक स्वीकार किया है।

(4) 360(90:) सूचनादात्रीओं ने स्वीकार किया है कि सेवानिवृत्ति के समय आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने की दषा तथा खर्च अधिक होना भी पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक कारक हैं।

(5) 340(85:) सूचनादात्रीओं के अभिमतों के अनुसार सेवानिवृत्ति के समय तक परिवार के सदस्यों की अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति कर पाने का साधन न होना भी; पारिवारिक सामाजिक समायोजन में बाधक कारक है।

(6) 288(72:) सूचनादात्रीओं के अनुसार परिवार में कर्ता/मुखिया की भूमिका समुचित रूप में निर्वाह करने में समर्थ न होना भी पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में विषिश्ट बाधक कारक हैं।

(7) 280(70:) सूचनादात्रीओं ने यह स्वीकार किया है कि सेवानिवृत्ति के पष्चात् सेवानिवृत्त महिला द्वारा अपनी कार्य भूमिकाएं (यथाः माता की, पुत्री की, चाची की, ताई की, दादी की इत्यादि के कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों के निर्वहन सम्बन्धी) भूमिकाएं भलीभॉति निर्वाह न कर पाना भी पारिवारिक– सामाजिक सामंजस्य में बाधक है। यदि वह अपनी भूमिकाएं सकारात्मक रूप से सक्रिय होकर पूरी करती है याफिर पूरी करने का सतत् प्रयास करती है तो पारिवारिक सामंजस्य उचित होता है अथवा होने की सम्भावनाएं रहती हैं।

(8) 300(75:) सूचनादात्रीओं की मान्यता है कि परिवर्तनषील व विशम (जटिल) परिस्थितियों में मुकाबला करने में व्यक्ति की अक्षमता तथा असफलता भी पारिवारिक सामाजिक सामंजस्य में बाधक कारक हैं।

(9) 322(80.50:) सूचनादात्रीओं के अभिमत यह स्पश्ट करते हैं कि परिवार के प्रति समर्पित, निश्ठावान तथा भावनात्मक लगाव न होना कारक भी सेवानिवृत्त के लिए पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक कारक हैं।

(10) 308(77:) सूचनादात्रीओं की यह मान्यता है कि जीवन के इस मुकाम (मोड़) पर भी सुख षान्ति की अनुभूति न कर पाना; पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक कारक है एवं,

(11) 264(66:) सूचनादात्रीओं ने यह स्वीकार किया है कि थोड़े में निर्वाह करने में असफल व्यक्तित्व एवं अनन्त आकॉक्षाएं व असीमित अपेक्षाएं सीमित न होना ये दोनों कारक भी पारिवारिक सामाजिक समायोजन में विषिश्ट उत्तरदायी बाधक कारक हैं।

उपरोक्त आनुभविक तथ्यों के विष्लेशण के प्रकाष में निश्कर्श है कि सेवानिवृत्त महिलाओं द्वारा उत्तरदायित्वों/जिम्मेदारियों (बच्चों की षिक्षा, जॉब सैटिलमेन्ट, विवाह आदि) को पूर्ण न कर पाना, अपरिपक्व व्यक्तित्व, धैर्यवान व्यक्तित्व न होना, सेवानिवृत्ति के समय आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होना, सेवानिवृत्ति तक परिवार के सदस्यों की अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति का साधन भी न होना, परिवार में कर्ता/मुखिया की समुचित भूमिका निर्वाह में असफल होना, सेवानिवृत्ति के पष्चात् परिवर्तनषील व विशम परिस्थितियों में मुकाबला करने में अक्षमता; परिवार के प्रति समर्पित, निश्ठावान व भावनात्मक लगाव न होना, जीवन के इस मुकाम (मोड़) पर भी सुख षान्ति की अनुभूति न कर पाना; और थोड़े में निर्वाह करने में असफल व्यक्तित्व (अनन्त आकॉक्षाएं व असीमित अपेक्षाएं) भी पारिवारिक सामाजिक समायोजन के मार्ग में विषिश्ट बाधक कारक हैं।

षोधार्थिनी ने उपरोक्त तालिका नं. 7(1) के अन्तर्गत पारिवारिक– सामाजिक समायोजन में बाधक सामान्य उत्तरदायी कारकों की सत्यता व सार्थकता का परीक्षण सॉख्यकीय परीक्षणः सह–सम्बन्ध गुणॉक (त) से करने का प्रयास किया है जिस पर निम्न तालिका 7(3) संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

तालिका नं. 7(3) : संयुक्त तथा एकांकी परिवारों की सूचनादात्रीओं के अभिमतों के सापेक्ष सह–सम्बन्ध गुणाँक का परिकलन– स्पीयर मैन कोटिक्रम अन्तर विधि द्वारा

क्रम	पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक सामान्य उत्तरदायी कारक	सेवानिवृत्त सूचनादात्रीओं की आवृत्तियाँ		संयुक्त परिवारों के कोटिक्रम R_1	एकांकी परिवारों के कोटिक्रम R_2	कोटिक्रमों का अन्तर $d=R_1-R_2$	कोटिक्रमों के वर्गों का योग d^2
		संयुक्त परिवार	एकांकी परिवार				
1	प्राचीन तथा नई विचारधाराओं में परस्पर तालमेल न होना	35	34	3	3	0	0
2	सेवानिवृत्त व्यक्ति द्वारा स्वयं को उपेक्षित अनुभव करना	40	35	1	2	–1	1
3	नई पीढ़ी के व्यक्तियों के आचरण व व्यवहारों से निराषाएं	37	38	2	1	1	1
4	सेवानिवृत्त द्वारा स्वयं की षक्ति में कमी की अनुभूति करना	21	17	7	7	0	0
5	पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्धों व अन्तःक्रियाओं में कमी की अनुभूति करना	24	25	6	4	2	4
6	उचित मान सम्मान मिलने में कमी की अनुभूति करना	26	20	4	6	–2	4
7	षारीरिक–मानसिक असमर्थता की दषाएं	25	23	5	5	0	0
	कुल योग	208	192	–	–	–	$\sum d^2=10$

स्पीयर मैन की कोटिक्रम अन्तर विधि से सह–सम्बन्ध गुणाँक का परिकलन

ladsrk{kj&
N= Øeksa dh
la[;k
d= dksfVØeksa

सूत्र : सह–सम्बन्ध गुणाँक ;तद्ध त्र 1 दृ 6∑क² / छ;छ².1द्ध

त्र 1 दृ 6 ग 10 / 7ख्49 दृ1,

त्र 1 दृ 5 / 28 त्र 1 दृ 0ण्1785

त्र 0ण्8215 (उच्चकोटि का धनात्मक सह–सम्बन्ध)

निश्कर्शः चूँकि संयुक्त तथा एकांकी परिवारों की सेवानिवृत्त महिलाओं के प्राप्त अभिमतों से सॉख्यकीय परीक्षणः सह–सम्बन्ध गुणॉक का मान; धनात्मक तथा उच्च कोटि का प्राप्त होना यह स्पश्ट करता है कि पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में (उपरोक्त निर्दिश्ट कारक) सामान्यतः बाधक उत्तरदायी कारक हैं।

षोधार्थिनी ने अध्ययन की गयी सभी 400 सेवानिवृत्त महिलाओं के पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक उत्तरदायी कारकों (दृश्टब्यः तालिका नं. 7(2) की सत्यता व सार्थकता का मूल्यॉकन 'सॉख्यकीय परीक्षणः असंगत (आकस्मिकता) गुणॉक **;फद्ध**' के द्वारा भी करने का प्रयास किया है जो निम्नवत् है–

तालिका नं. 7(4) : सेवानिवृत्त महिलाओं के पारिवारिक–सामाजिक समायोजन में बाधक विषिश्ट उत्तरदायी कारक : (असंगत गुणाँक (**फ**) का परिकलन)

क्रम	सेवानिवृत्त महिलाओं के अभिमत/प्रत्युत्तर	सेवानिवृत्तों की संख्या		कुल योग
		संयुक्त परिवार	एकांकी परिवार	
1	''हाँ''	168।	65ठ	233
2	''नहीं''	40ब्	127क्	167
	कुल योग	208	192	400

सूत्रः असंगत/आकस्मिकता गुणांक **;फद्ध त्र ।क दृ ठब् / ।क. ठब् त्र 168 ग 127 दृ 65 ग 40 / 168 ग 127. 65 ग 40**

त्र 21336 दृ 2600 / 21336. 2600 त्र 18736 / 23936

त्र 0ण्7827 (उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निश्कर्शः चूँकि सॉख्यकीय परीक्षणः असंगत/आकस्मिकता गुणॉक **;फद्ध** का गणनात्मक मान धनात्मक तथा उच्च कोटि का प्राप्त हुआ है जो उसके प्रामाणिक मान (+)1 तथा (–)1 के मध्य है अतः स्पष्ट है कि तालिका 7(2) में निर्दिश्ट कारक सेवानिवृत्त महिलाओं के पारिवारिक– सामाजिक समायोजन में विषिश्ट रूप से बाधक तथा उत्तरदायी कारक हैं।

KKKKKK

सन्दर्भ–सूची

1. कूटनर बर्नार्ड ; (2006) ऐम्प्लॉइड्स एण्ड रिटायरमेन्ट्सः ए स्टडी ऑफ रिटायर्ड्स ऑफ अमेरिकन आर्मी; सोषियोलॉजी रिव्यू वॉल्यूम 27 (2006), पृश्ठ 112– 117, हेनरी हॉल्ट, न्यूयार्क।

2. क्रोटेड फ्रेड ई.जी. एण्ड रॉबर्ट सी.एच. (1969) वूमेन इन रिटायरमेन्ट्स एण्ड दि प्रोफेषनल वर्क्स; 'जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, अमेरिकन ऐकाडेमी, न्यूयार्क', पृश्ठ 32–45

3. विलियम गेट्स ; (1998) रोल–ऐडजस्टमेन्ट एण्ड रोल थ्योरी, जॉन विले एण्ड सन्स पब्लिषिंग कम्पनी, हॉल्ट, इंक0 न्यूयार्क, पृश्ठ 301–302

4. पीटरसन एच.सी. ; (2006) रिटायरमेन्ट एण्ड द इमर्जिंग सोसल पैटर्न्स, यूनिवर्सिटी ऑफ ओहियो प्रेस, षिकागो, पृश्ठ 25–31

5. सिंह सीमा कुमारी ; (2002) सेवानिवृत्त व्यक्तियों का भूमिका– समायोजन : एक समाजषास्त्रीय विष्लेशण, पी.एच.डी. षोध प्रबन्ध (समाजषास्त्र) समाज विज्ञान संकाय, बनस्थली विद्यापीठ डीम्ड यूनिवर्सिटी, बनस्थली (राज.) 304022, पृश्ठ 118–204

6. षेफर एल.एफ. एण्ड षोबेव डब्ल्यू. (2007) रोल ऐडजस्टमेन्ट : ए स्टडी ऑफ साइको फैक्टर्स; मिफिन कम्पनी (प्रा0लि0) हॉगटन, बोस्टन, पृश्ठ 90

KKKKKK